Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

कृत्रिम बुद्धिमता के परिप्रेक्ष्य में साहित्य सृजन

डॉ.जयप्रकाश नागला*

नांदेड़

शोध सार

यह दौर कृत्रिम बुद्धिमता (AI - Artificial intelligence) का प्रारंभिक दौर है। मानवीय जिज्ञासाओं ने अबतक जितना भी आविष्कार विभिन्न क्षेत्रों में किया है , उसमें सबसे ज्यादा वर्तमान समय में इस कृत्रिम बुद्धिमता से आज का युवा वर्ग प्रभावित हुआ है। अब इस का उपयोग साहित्य क्षेत्र में उसी तरह बढ़ रहा है जिस तरह अन्य क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। हिंदी साहित्य इस कृत्रिम बुद्धिमता से कितना लाभान्वित होगा यह तो आनेवाला कल ही बताएगा अपितु इसने एक नई सोच , नई उम्मीद , नई महत्वाकांक्षा के बीज बो दिए है , जिससे उत्पादित जीवन के समुचित अभ्यास का खाका बदल दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र को भलीभांति प्रभावित किया है इस कृत्रिम बुद्धिमता ने। हिंदी साहित्य की समस्त विधाओं को इसके माध्यम से नया स्वरूप प्रदान हो सकता है।

बीज शब्द: *युवा पीढ़ी, तकनीक, हिंदी साहित्य, आधुनिककरण, साहित्य सृजन।*

Received: 02/12/2025
Accepted: 17/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ.जयप्रकाश नागला
Email: jayprakashnagla87@gmail.com

जब से आधुनिक शिक्षा का विकसित हुई है तब से हम सीधे कृत्रिम युग में जीवन व्यतीत कर रहे है। विश्व में कंप्यूटर का जाल इस तरह विकसित हुआ है कि अब कोई कितना भी चाहे तो इस युग से वापस नहीं लौट सकता। कृत्रिम बुद्धिमता के बारे में इतना आसान नहीं है। शिक्षा तथा रोजगार क्षेत्र में इस कृत्रिमता ने बहुत जल्दी अपने पाव जमा लिए , कारणवश हर क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए हैं। कृत्रिम बुद्धिमता का सबसे बड़ा फायदा यह हुआ है कि कम समय में ज्यादा काम हो जाता है। वर्तमान समय शायद ही कोई क्षेत्र कृत्रिम बुद्धिमता से ना जुड़ा हो। घर घर में महिलाओं की रसोई तक इसकी चपेट में आ गई है। जब रंगीन टीवी के बड़े पर्दे पर महिलाएं विज्ञापन देखती है तब उनके सामने कितने ही आयाम इस तरह विज्ञापन द्वारा परोसे जाते है कि उससे बचने का कोई विकल्प होता ही नहीं है। " विज्ञापन सामाजिक स्तर को इतना बिगाड़ गए है तथा बिगाड़ भी रहे है कि हमारी बुद्धिजीवी संस्कृति , संस्कार इसके सामने बौने हो जाते है। कंप्यूटर जैसी कृत्रिम बुद्धिमता की दुनिया विभिन्न प्रकार के लाखों सकारात्मक और विकारात्मक विषयों से जुड़ गई है और हर मनुष्य इस प्रणाली से परोक्ष - अपरोक्ष रूप से जुड़ गया है। देखा जाए तो यांत्रिक , मांत्रिक एवं तांत्रिक जैसे जीवन जीने के विषय अब सिर्फ कंप्यूटर के रुपहले पर्दे तक ही सीमित हो गए हो। पहले फिल्में और उसकी कहानी का मूलाधार कोई न कोई अर्थ लेकर ही बनाई जाती थी। मन की गहराई , संवेदनाओं को छू लेती थी फिल्म और कहानी। उन दिनों तकनीकी स्वरूप वर्तमान समय की तरह इतना आधुनिक तो था ही नहीं , फिर भी रुपहले पर्दे ने हर कहानी को जीवंत किया और सफलतम रूप से दर्शकों के बीच अपनी पैठ बनाई। अब बात जब कृत्रिम बुद्धिमता की हो रही हो तो इतना आसान तो इसको समझना भी नहीं आता। मानवीय बुद्धिवाद को कोई मशीन , यंत्र कभी हरा ही नहीं सकती , यह मेरे अपने निजी विचार है। इतनी बात अवश्य है कि कंप्यूटर के पर्दे पर गूगल खंगालने के बाद आपको वह विषय या किसी विषय संदर्भ की कोई कहानी या उस विषय पर विभिन्न प्रकार की जानकारी आपको मिल जाएगी। गूगल पर कहानियां बहुत सी मिल भी जाएगी या फिर किसी रचनाकार से पूछकर उसका विश्लेषण पृथक से भी किया जा सकता है।

साहित्य सृजन क्षेत्र में कथाकार , कवि या किसी कार्य के संदर्भ में इन दिनों हर काम व्यवसाय , उद्योग बन गया है , आश्चर्य इस बात का है कि इस कृत्रिम बुद्धिमता को सामाजिक स्तर पर भी अघोषित मान्यता

मिल गई है। यही कारण है कि वर्तमान युग सौ प्रतिशत कृत्रिम बुद्धिमता की गिरफ्त में है तो गलत नहीं होगा।

अबतक हिंदी साहित्य या अन्य किसी भी भाषा का साहित्य कथाकार , कवि , लेखक के सृजन का उदाहरण हुआ करता था। वर्तमान साहित्य सृजन यदि कृत्रिम बुद्धिमता से आविष्कृत हुआ हो तो वह चिंतन की कसौटी का प्रतिक शायद ही माना जाएगा। इसलिए की कथानक और उसको लिखने में रचनाकार की रचनाधर्मिता उस श्रेणी की होना असंभव है जो अतीत की धरातल पर लिखा गया था। मशीनी बुद्धिमता को विगत दस पंद्रह वर्षों में ही लोकप्रियता इस कदर मिली है कि लेखन और पठन जैसी जीवनावश्यक स्वरूप का वर्तमान में कोई अस्तित्व जैसी बचा ही नहीं। मनुष्य की आदतों में यह इस प्रकार रच बस गया है कि उसे इस बात का शुमार ही नहीं रहा कि वह कितना बुद्धिजीवी है या फिर वह अपना जीवन कृत्रिम बुद्धिमता के सहारे व्यतित कर रहा है। हर बात ,हर विषय , हर संदर्भ उसे प्रतिपल कही से उधार लेना पड़ रहा है , इसी का नाम कृत्रिम बुद्धिमता है और कृत्रिम बुद्धिमता के दौर में साहित्य सृजन कितना परिपक्व हुआ या होगा , यह प्रश्न भी जटिल होता जाएगा। हम जीवन के गणित अचूक कर रहे है या हम यह गणित बिगाड़ रहे है क्या यह समूची मानव जाति के लिए चिंतन का विषय नहीं है ? कृत्रिम बुद्धिमता और साहित्य जैसा विषय दोनों भी मानवीय बुद्धि से ही संचालित होते है , लेकिन मनुष्य ने ऐसे ऐसे आविष्कार किए है कि वह स्वयं बुद्धिवान , प्रतिभावान होकर भी आज कृत्रिम बुद्धिमता के सहारे ही अपना जीवन यापन करने पर विवश है। कृत्रिम बुद्धिमता के परिप्रेक्ष्य में साहित्य का मूल्यांकन किया जाए तो एक बात सीधे और साफ कहना चाहता हूं कि हिंदी साहित्य हो या फिर अन्य किसी भी भाषा का साहित्य हो , उसका मूल्यांकन कृत्रिम बुद्धिमता से करना व्यर्थ है। इसलिए की कम्प्यूटर या रोबोट जैसी मशीनें केवल डाटा परोसती है , चिंतन या किसी भी तरह की सोच नहीं परोसती है। यह मनुष्य ने मनुष्य की सुविधा के लिए आविष्कृत मशीनें हो सकती है परंतु प्राकृतिक बुद्धिमता के सामने बहुत बौनी ही होगी। अब इस तकनीकी विश्व के साथ मनुष्य को कदम - दर - कदम हर क्षेत्र में चलना जरूरी हो गया है , आगामी दिनों इसके अधीन होना भी जरूरी ही होगा। **

मेरे सामने जब कृत्रिम मेधा के युग में हिंदी साहित्य जैसा विषय आया तब सर्वप्रथम विषय के अभ्यास को लेकर चिंतन प्रारंभ हुआ। इसलिए की इस विषय पर पुस्तक उपलब्ध आसानी से होना या प्राप्त करना मेरे लिए संभव नहीं था। इसी दुविधा में मैने हमेशा की तरह गूगल खंगाला , तब कुछ सामग्री उपलब्ध हुई। कहने का तात्पर्य यह है कि विषय को समझने के लिए और कुछ लिखेंगे के लिए कृत्रिम बुद्धिमता का ही सहयोग लेना मेरे लिए उचित रहा। अब इस तकनीकी का महत्व मुझे बहुत अच्छे से समझ आ गया कि वर्तमान से ज्यादा हम आगामी दिनों यानी आनेवाली पीढ़ियों इस कृत्रिम मेधा की गिरफ्त में होगी।

देखा जाए तो सूचना और प्रौद्योगिकी के युग में कृत्रिम बुद्धिमता का महत्व हमारे जीवन में हमारी सांसों जैसा ही हो गया है। इस में और एक कड़ी मजबूती से जुड़ रही है यों समझो कि जुड़ गई है वह है " AI " भले ही यह शुरुवाती दौर में है लेकिन हिंदी साहित्य में शोध , अनुवाद , आलोचना , लिपयांतर , डाटा संरक्षण में बहुत ही नूतन आविष्कार हुआ है। इसको डिजिटल ह्यूमैनिटी का दौर कहना भी अनुचित नहीं होगा।

अब साहित्य क्षेत्र में विभिन्न विधाओं को आत्मसात करना और उनका विश्लेषण सरल हो गया है। विभिन्न शैली और विधाओं को साहित्य धर्मी इस माध्यम से सृजित करेंगे , लेकिन इसमें कितनी उनके मन की उपज होगी और उनका सृजन कितना मौलिक होगा इस बात पर तकनीकी बुद्धिमता कितनी उपजाऊ होगी यह आनेवाला समय तय करेगा। AI को साहित्य सृजन के लिए कितना उपयोगी माना जाए यह रचनाकार की बुद्धिमता के साथ कृत्रिम बुद्धिमता पर निर्भर करता है। एक साहित्य धर्मी जब कृत्रिम बुद्धिमता की भाषा शैली की मदत से लेखन शैली , वाक्य रचना को अंजाम देता है तो यह भी उसकी विचारात्मकता को निश्चित ही एक दिशा ही प्रदान करेगा। **

अब कृत्रिम बुद्धिमता के परिप्रेक्ष्य में साहित्य का संरक्षण जैसा मुद्दा भी महत्वपूर्ण है। शताब्दियों पूर्व की पांडुलिपियां , उनका सरंक्षण और डिजिलिटीकरण भी AI के कारण संभव होगा इसमें संदेह नहीं है। यहां एक बात बहुत अच्छी तरह समझने जैसी है कि क्या AI कहानी या कविता लेखन में सक्रिय भूमिका निभा सकता है ? लेखकों के लिए इसका उपयोग कितना कारगर होगा और विभिन्न विषयों , विधाओं में लिखने की क्षमता प्रदान करेगा। वैसे AI के बारे में मेरा विस्तृत अभ्यास इतना ही है कि व्यवसाय , विज्ञान , कला , गणित ,इतिहास और भूगोल जैसे विषय शिक्षा के क्षेत्र में छात्र - छात्राओं के लिए महत्वपूर्ण माना जा सकता है। AI को कृत्रिम बुद्धिमता और साहित्य सृजन के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो साहित्य सृजन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका नि भा सकता है । अब साहित्य का मूल्यांकन , प्रचार और प्रसार भी इस माध्यम से किया जा सकता है। तकनीकी , प्रशासकीय तथा शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न विधाओं को आत्मसात करने का प्रयास इसके उपयोग से हम कर सकते है। शोधकर्ताओं के लिए परिपूर्ण भाषा , भाषा का व्याकरण

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

भी समझने का सहायक हो सकता है यह AI यानि कृत्रिम बुद्धिमता यानि आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस माध्यम। शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को भाषा की बहुत गहरी जानकारी इस माध्यम से प्राप्त हो सकती है । विभिन्न भाषाओं के संसाधनों द्वारा भाषा के परिवर्तन यानि अनुवाद का अभ्यास भी संभव हो सकता है। इसी के साथ साहित्यिक आलोचना , विश्लेषण में भी कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग बहुत ही अच्छी तरह हो सकता है ।साहित्य कृतियों का तुलनात्मक अभ्यास कर वस्तुस्थिति और भाषा विज्ञान के माध्यम से नया स्वरूप भी साहित्यकारों को प्राप्त हो सकता है । AI के सहयोग से कहानी , कविता और तथा निबंध लेखन में भी AI बहुत ही सहायक हो सकता है । इसी के माध्यम से रचनाकार विभिन्न विधाओं में अपनी रचनाओं का सृजन कर रहे है ।यह नुस्खा बहुत ही कारगर साबित हो रहा है। AI एक नई विचार धारा को प्रस्तुत कर सकता है। साहित्यकारों के लिय AI सरल माध्यम बनकर उभर रहा है परंतु इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि इसमें मानवीय संवेदनाओं का अभाव देखा जा सकता है । प्रत्यक्ष अनुभूतियों , संवेदनाओं और अनुभवों को प्रस्तुत करने की शत प्रतिशत क्षमता शायद ही AI के सहयोग से प्राप्त होना संभव हो ? यह एक ही प्रश्न AI को लेकर नहीं , बल्कि इस के उपयोग के समय बहुत से प्रश्न साहित्यकारों के सामने होंगे , जिसका उत्तर हमे खोजना होगा या फिर ऐसा विकल्प भी हमे ही ढूंढना होगा जिससे संभावित खामियां दूर की जा सकती हो। जो भी अभाव इसके कारण साहित्य सृजन के समय उभरकर सामने आएंगे उसके प्रति आगामी दिनों कोई नया आयाम ढूंढना जरूरी भी होगा। इस के उपयोग से साहित्य सृजन की विकसित होने जा रही किसी भी तरह की प्रक्रिया को दिशात्मक जानकारी प्राप्त होती रहेगी। लेखकों और साहित्यकारों के लिए भविष्य में साहित्य सृजन में सांस्कृतिक तथा विभिन्न विधाओं का आधारस्तम्भ बनेगी कृत्रिम बुद्धिमता की मानवीय जीवन में उपयोगिता एवं भूमिका। हिंदी साहित्य , हिंदी भाषा , हिंदी के सुलभ उपयोग हेतु नए आयाम देश ही नहीं विश्वभर में विकसित होंगे और AI हमारे जीवन में बहुआयामी होने की संभावना बढ़ेगी। AI का प्रचार - प्रसार भारतीय शिक्षा पद्धति को मजबूत करेगा तथा इसी के साथ नई शिक्षा नीति भी नए रूप में विकसित होगी। कुछ या बहुत कुछ मात्रा में हमारी भारतीय सभ्यता , संस्कृति इससे प्रभावित होगी । कारणवश भारतीय जनमानस को कितनी ही चुनौतियों का सामना हर क्षेत्र में करना पड़ेगा । यहां बात जब हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में AI यानि कृत्रिम बुद्धिमता की करनी हो तो उसके दोनों पहलुओं पर अपना ध्यान केंद्रीय करना भी अत्यावश्यक है। AI का हमारी जीवनशैली पर भविष्य में बहुत ज्यादा उपयोग से मानसिकता पर फर्क पड़ने की संभावना भी प्रबल मानी जा रही है। कारणवश हिंदी साहित्य के भारतीय मूल स्वरूप से अनजाने में इस कदर छेड़ - छाड़ हो सकती है। इसी कारण हम भारतीय छात्र इसके तकनीकी उपयोग तक सीमित हो तो उचित रहेगा। कृत्रिम बुद्धिमता की वास्तविकता यह है कि इसका आविष्कार मनुष्य ने किया और मनुष्य ही इससे सीखता है। इसके लिए जिस महान वैज्ञानिक (मै इस संदर्भ में किसी भी राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय किसी वैज्ञानिक को नहीं जानता) इतनी मुश्किल वैज्ञानिकता का असर भारतीय समाज में होगा भी या फिर हमारा सबकुछ विज्ञानवादियों के अधीन हो जाएगा , इस तरह का चिंतन भी आज ही होना जरूरी है। साहित्य क्षेत्र हो या फिर अन्य कोई क्षेत्र इसकी उपयोगिता भविष्य में बहुत ज्यादा बढ़ने पर भी कृत्रिम बुद्धिमता जितनी और जिस प्रकार विकसित या प्रचारित होगी उसमें योगदान मनुष्य की वास्तविक बुद्धिमता का ही होगा , परंतु आनेवाली पीढ़ियों बहुत ज्यादा इसके अधीन होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता । ऐसा ही संदर्भ हिंदी साहित्य या फिर अन्य भाषाओं के साहित्य को लेकर भी दिया जा सकता है। हर कहानी , नाटक , फिल्मी पटकथा आदि में लेकर कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग बढ़ जाएगा , परंतु इससे प्राप्त कोई भी जानकारी पूर्वाग्रह से ग्रस्त ही होगी यानि डाटा संकलन ही हमारे लिए काम करेगा । मशीनी बुद्धिमता का हमारे जीवन में बहुआयामी उपयोग इतना ही होगा कि हम जिस विषय पर कुछ ढूंढेंगे वह हाने तुरंत मिल जाएगा। जिस तरह आज हमारे रसोई में मैगी जैसे इंस्टेंट फूड का उपयोग धड़ल्ले से हो रहा है उसी तरह साहित्य में भी इंस्टेंट विचारों का उपयोग बढ़ जाएगा। इसमें नए आयाम विकसित किस प्रकार भी हो , उसने मनुष्य की वास्तविक बुद्धिमता का उपयोग आवश्यक ही होगा। हम मैगी जैसे इंस्टेंट फूड का जितना प्रयोग हमारे जीवन में कर रहे है , उतना ही प्रयोग कृत्रिम बुद्धिमता होगा। उसके भीतर संकलित डाटा हमे किस तरह कुछ नयापन प्रदान करेगा यह आनेवाला कल ही बताएगा। हो सकता है कि मनुष्य की सारी कल्पनाएं भी इसके अधीन होकर किसी नवीनतम साहित्य विद्या की जन्म दे और कृत्रिम बुद्धिमता हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर सार्थकता प्रदान करें।

निष्कर्ष -

एक बात बताना जरूरी है कि भले ही अन्य क्षेत्र की तरह साहित्य क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमता AI का उपयोग बाद रहा है परंतु मानवीय मस्तिष्क के अनुरूप कोई भी लेखन या साहित्य सृजन परिपूर्ण नहीं हो सकता । कृत्रिम बुद्धिमता से साहित्यकार स्वयं के सृजनात्मक , रचनात्मक सोच को जिस बेबाकी से कागज पर उतरता है उतनी शिद्दत

कृत्रिम बुद्धिमता से साहित्य में कुछ कर जाना , कुछ कर पाना संभव नहीं लगता। इसलिए की कम्प्यूटर या रोबोट में जो डाटा संरक्षित होता है वहीं परोसा जाता है। हम AI जैसी उपलब्धि को किसी मानवीय बुद्धिमता से किसी भी तरह आंकने का मिशन चला तो सकते है परंतु कृत्रिम बुद्धिमता किसी भी कमांड (आदेश) का अनुपालन उतना ही कर पाएगी जितना डाटा (कोष) हमारे द्वारा उसने संग्रहित किया गया है। मानव के ही मन और मस्तिष्क की उपज ही तो है ये कृत्रिम बुद्धिमता यानी Artificial intelligence ओर इसकी क्षमता उतनी ही ज्यादा बढ़ेगी जितनी ज्यादा विभिन्न क्षेत्र की जानकारी डाटा इसके उपयोग से हमारी मानसिकता कितनी परिपक्व होती है , इस बात का चिंतन सभी उन भाइयों को भी करना चाहिए जिन्होंने इसके उपयोग की मानसिकता बनाई है ।

संदर्भ

गूगल सर्च आलेख

1 - हिंदी साहित्य अध्ययन में कृत्रिम बुद्धिमता नई संभावनाएं एवं चुनौतियां - प्रा. डॉ. महेशकुमार वाघेला

2 - हिंदी भाषा एवं साहित्य अध्ययन में कृत्रिम बुद्धिमता एक बहुआयामी दृष्टिकोण - डॉ. रेणुका सुमन सैनी

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)